International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 16-17

परसाई की धार्मिक दृष्टि

सतीश साहू
शोधार्थी, शासकीय, स्नाकोत्तर महाविद्यालय दतिया, जिला–दतिया, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

देश के पिछले लगभग 5000 वर्ष के इतिहास में हिन्दू धर्म विभिन्न मार्गों और मोंड़ो से निकलता हुआ अग्रसर हुआ है। इस धर्म की यह विलक्षणता रही है कि सब मतभेदों, वैमनस्य और विरोधी धारणाओं व मतों के होते हुये भी उसने अपने मूलभूत सिद्धांतो की एकता को बनाये रहता है। परम ब्रह्म की प्राप्ति में संलग्न हिन्दुओं ने अनेक मार्गों को अपनाया है। इस पर विश्वास किया है कि ईश्वर एक है, और इस पर भी कि ईश्वर अनेक हैं। यह माना कि प्रभु की प्राप्ति निर्गुण उपासना के माध्यम से भी हो सकती है ईश्वर ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग या भक्ति मार्ग पर चलने पर भी प्राप्त हो सकता है। और उपनिषदो के दर्शन द्वारा भी पंथ, उपपंथ, संप्रदाय साधना मार्ग अनेक हैं, पर ध्येय सबका एक ही है। नम्बूदरी, तांत्रिक, शैव, वीर शैव, लिंगायत भक्ति के उपासक, वैरागी सखी संप्रदाय, उदासी, संप्रदाय, आर्य समाजी, ब्रह्म समाजी, राधा स्वामी सत्संगी इत्यादि अनेकानेक पंथ, मार्ग और सम्प्रदाय हैं।[1]

वर्तमान भारत में यह सब चारों ओर विद्यमान है। मंदिरों और पूजा स्थलों पर निरन्तर बजते शंख, घण्टे और घडियालों का त्रिनाद, भगवान की मूर्तियों का विभिन्न सज्जा में दर्शन, पण्डे पुजारियों के आडम्बर। रमते रमाते, चिमटा बजाते साधु। गांजा – चरस पीते, धूनी रमाते, बम बम महादेव करते साधु। शांत साधनारत ध्यानमग्न साधु। भण्य आडम्बर रचाकर चकित एवं प्रभावित करते हुये मठाधीश महंत। भक्तिमार्गियों की भजन और कीर्तन मंडालियों, देवी के जगराते और अखण्ड पाठों के बीच अंधविश्वास और दुराग्रह पनप रहे हैं। अनुष्ठानो और कर्मकाण्डो के बीच पाखण्ड, आडम्बर, व्यभिचार और भ्रष्टाचार पनप रहा है। धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को ठगा जा रहा है, दूसरी ओर पाप को प्रक्षय मिल रहा है। धर्म का रूप कुत्सित, विकृत और मलिन बनता जा रहा है। सत्य तो यह है कि धर्म ने अधर्म का चोला पहन लिया है। अंधविश्वास, आडम्बर और ढोंग ही आज धर्म के पर्यायवाची बन गये हैं। धर्म की ऐसी विषम और विकृत स्थिति को देखकर कबीर से परसाई तक के व्यंग्यकारों ने इन्हें अपना लक्ष्य बनाया और इन पर तीव्र और शक्तिशाली प्रहार किये।

आधुनिक युग के कबीर की संज्ञा से विभूषित हरिशंकर परसाई ने बहुत ही रोचक शैली में व्यंग्य द्वारा चुटीले प्रहार किये हैं। भगवान के नाम की दुहाई देकर कैसा भी अनाचार और भ्रष्टाचार किया जा सकता है। भगवान का धन ब्याज पर दिया जाता है ''बैष्णव के पास नम्बर दो का बहुत पैसा हो गया है। कई एजेन्सियॉ स्टाकिस्ट हैं। जब चाहे माल दबाकर ब्लैक करने लगते हैं, मगर दो घण्टे विष्णु की पूजा में कभी नागा नहीं करते। सब प्रभु की कृपा से हो रहा है। उनके प्रभु भी शायद दो नम्बरी हैं। एक नम्बरी तो शायद ऐसा नहीं करने देते।'' [1] इसी संदर्भ में डॉ. कपिल कुमार तिवारी ने लिखा है कि ''परसाई ने धर्म की भूमिका पर इस व्यंग्य में बहुत ताकत के साथ प्रहार किया है। धर्म और धन्धा, मानवीयता धर्म और मूल्य हीनता आज सब कुछ कितनी पर्याय हो गई है। लुटेरे धर्म और प्रभु का कितना अच्छा प्रयोग कर रहे हैं।'' [2] परसाई की कहानी ''वैष्णव की फिसलन'' प्रतीकात्मक है, जो यह दर्शाती है कि जब धर्म व्यवसाय और अर्थ से जुड़ जाता है तो कितना जड़ और शोषक बन जाता है जिसका प्रयोग आधिकाधिक लूटमार करने और आदमी को व्यक्तित्वहीन तथा समझौतावादी बनाने में किया जाने लगा है। परसाई जी ने इस कहानी में धर्म और शोषण के अंतः संबंधों को बहुत सहज व सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। कहानी के प्रारम्भ में ही लिखते हैं– ''वैष्णव करोडपति है। भगवान विष्णु का मंदिर जायजाद लगी है। भगवान सूदखोरी करते है। ब्याज से कर्ज देते है। वैष्णव दो घण्टे रोज पूजा करता है फिर गादी तकिये वाली वैठक में आकर धर्म को धन्धे से जोड़ता है। धर्म धन्धें से जुड़ जाये इसी को योग कहते है।'' [3] वास्तविकता यह है कि प्रभु विष्णु के पास बहुत पैसा हो गया और इन्हीं की आज्ञानुसार वैष्णव उसका उपयोग करने हेतु होटल खोलना चाहते हैं, मगर मश्किल यह है कि होटल बिना शराब, नाच–गान, और औरत के चलते नहीं। बैष्णव मुश्किल में है कि इन धार्मिक आस्थाओं के साथ इनसे समझौता कैसे करें ? किन्तु ईश्वर सारे तर्क अपने आप उसमें पैदा करते जाते हैं शराब से आशय 'सोमरस' कैबरे का आशय 'रासलीला' और औरत का आशय 'प्रकृति और पुरूष' का संयोग।

न्याय व्यवस्था में भगवान के नाम पर घोर अन्याय और अत्याचार व्याप्त है। इसका निवारण करते हुए परसाई ने अपने निबंध 'न्याय का दरवाजा' में कटु आक्षेप द्वारा लक्ष्य को बंधा है–

> ''धर्म अच्छे को डरपोक और बुरे को निडर बनाता है। झूठ जरा से पवित्र सहारे से चढकर सत्य की बर्थ पर लेट जाता है। वह सहारा गंगा जी हो, जनेऊ हो, धर्म हो, ईष्वर हो।'' [1]

आज धर्म शीशे की तरह नाजुक हो गया है। तनिक भी चोट लगी और चूर – चूर हो गया। धर्म को विकृत कर साम्प्रदायिकता के रंग में वैमनस्य एवं फूट पैदा की जाती है, परसाई अपने निबंध 'हम बिहार से चुनाव लड़ रहे है' में प्रताड़ित करते हुए लिखते है ''मेंने कहा धर्म की संस्थापना तो सांप्रदायिक दंगो से हो रही है। आप एक हड्डी का टुकड़ा उठाकर मंदिर में डाल दीजिए और हिन्दु धर्म के नाम पर दंगा करवा लीजिये। धर्म का उपयोग अब दंगा करवाने के लिये हो गया है।'' [2]

आजकल ज्योतिष का ऐसा चक्कर चल पड़ा है कि हमारे ऊपर थोड़ा भी संकट आता दिखाई देता है तो पंडित के पास जन्म कुण्डली लेकर दौड़ पड़ते है। वैज्ञानिक युग में असंख्य मनुष्य है जो प्रत्यक्ष और तर्क पूर्ण बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और जो अप्रत्यक्ष और रहस्यपूर्ण है उस पर पूर्ण विश्वास से भरे रहते हैं। अष्टग्रही योग यदि है तो इसका असर विश्व पर होगा परन्तु सबसे ज्यादा परेशान हम हैं। भारत में ऐसे पंडितो की कमी नहीं है जो चुनाव टिकिट से लेकर प्रलय तक की घोषणा करते है।

परसाई जी 'अष्टग्रही योग आ गया' निबंध में इस कुनीति की निन्दा करते हुए लिखते हैंः– ''साधो भारत वासियों को चिंता की विल्कुल भी जरूरत नहीं है। हमारे यहां का पण्डित पुरोहित वर्ग इतना प्रबल है कि वह आठ ग्रहों को टाल देगा। ब्रह्माण्ड में जितने भी ग्रह और नक्षत्र है उन सबका एग्रीमेंट अपने पंडितों के साथ है। भारत का ब्राह्मण ग्रहों को मना लेता है। लड़के लड़की की कुण्डली में जब ग्रह नहीं मिलते और विवाह नहीं जमता तब पुरोहित ही आकर समस्या हल करता है।...................... एक ब्राह्मण की पूजा से ग्रह शांत हो जाता है। जव इस देश के हजारों ब्राह्मण ग्रहों की पूजा करेंगे तो आठ क्या आठ सौ ग्रह भी शांत हो जायेंगे।'' [3] धर्म के नाम पर कुछ भी अनर्थ किया जा सकता है।''भक्त मंदिर के लिए चंदा इकट्ठा करता है तो उसमें से अपना गुसलखाना भी बनवा लेता है।'' [4]

भगवान और मंदिर के नाम पर भोली भाली अंधविश्वासी जनता से ऐंठी गई रकम का कैसा दुरपयोग होता है। परसाई जी की यह पंक्ति धर्म के कुत्सित स्वरूप को सामने रखती प्रकट होती है– कि ''धर्म की नजर अक्सर ऐसी विसंगत हो जाती है। जो पानी छानकर पीते हैं वे आदमी का खून बिना छना पी जातें है। [1] धार्मिक व्यक्तियों के विश्वास का कोई अन्त नही है, वे अन्त तक परमात्मा के विश्वास के सहारे जुड़े रहते हैं। परसाई जी चुटकी लेते हुए लिखते हैं, ''भगवान पॉच लड़कियों के बाद लड़का देकर अपने होने का सबूत देता रहता हैं।'' [2]

परसाई रुढ़ अर्थ में धार्मिक नहीं है। परन्तु हम उन्हें धार्मिक कहें तो यह मानना पड़ेगा कि परसाई की धार्मिक भावना मानवीयता के व्यापक धरातल पर खड़ी है। वे मनुष्य को धर्म से भी बड़ा मानते है। आज धर्म का जो अर्थ समाज ग्रहण करता जा रहा है परसाई जी उसके विरूद्ध हैं। वे नहीं चाहते कि धर्म का सत्य स्वरूप आडम्बरों से ढक जाये। एक स्थान पर परसाई जी ने धर्म के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा हैः ''मनुष्य से बड़ा कोई नहीं है मनुष्य का जिससे कल्याण होता है वहीं धर्म है। जो मनुष्य का हित करता है वही साधु है। जो मनुष्य को ऊपर उठाता है वही संत है। ईश्वर की सत्ता भी मनुष्य ने इसलिए स्वीकार की है कि वह त्राता है, रक्षक है, लोक हितकारी है। इसलिए मानव कल्याण के अतिरिक्त कोई कसौटी नहीं है'' [3]

आज अधिकांश व्यक्ति अपने आपको काफी उन्नत और उपदेशक बनने का समझने का भ्रम पाल बैठा है। इसलिए वह आदमी केवल अपनी ही बात कहना चाहता है, वह किसी दूसरे की बात सुनना नहीं चाहता। ऐसे लोगों के संबंध में परसाई जी लिखते हैः– ''विधाता जब मनुष्य को बनाकर दुनिया में भेजने लगता है तो उसके कान के पास मुंह लगाकर धीरे से कह देता है कि देख दुनिया में सबसे अधिक अकल मैंने तुझी को दी है। हर एक से विधाता यही कह देता है और इसलिए हर आदमी जन्म से ही उपदेशक हो जाता है।'' [4] 'शवयात्रा का तौलिया' निबंध में परसाई जिस व्यक्ति का चित्र उभारते हैं वह देखने की चीज है। ये धार्मिक अंधविश्वास में जी रहे हैं। इन्होंने किसी महात्मा के प्रवचनों के दौरान यह सुन रखा था कि जो व्यक्ति अपने जीवन में सौ शवयात्रा पूरी कर लेता है उसे स्वर्ग प्राप्ति होती है। परसाई जी के शब्दों में–ः

> '' वे खूटी पर शवयात्रा में लपेटा जाने वाला तौलिया तैयार रखते हैं। किसी के मरने की खबर मिली नहीं कि इतने प्रसन्न होते हैं जैसे किसी की शादी हो रही हो। दफ्तर से छुट्टी ले लेगें। घर में और मोहल्ले में ऐलान कर देगें कि 'हम फला आदमी की मिट्टी में जा रहे हैं।' जब शव को जलाकर लौटते हैं, तो इतने प्रसन्न लगते हैं, जैसे किसी का जीवन बचाकर आ रहे हों।'' [1]

आज देश में धर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदारों ने अनेक विसंगति, विकार एवं विकृतियां पैदा कर दी हैं। परसाई जी ने ऐसे ही धार्मिक परिवेश को लक्ष्य बनाकर व्यंग्य के अस्त्र और साधनों का प्रयोग करते हुये भरपूर प्रहार किये हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यह पृष्ठ भूमि आंशिक रूप से डॉ. राधाकृष्णन की पुस्तक, इंडियन फिलासफी (खण्ड–2) मैकमिलन कं. लंदन 1951 पर आधारित है।
2. परसाई रचनावली भाग–1 पृष्ठ 165
3. सं. मनोहर देवालिया– हरिशंकर परसाई की दुनिया, पृष्ठ 72
4. परसाई रचनावली भाग – 1 पृष्ठ 165
5. परसाई रचनावली भाग – 3 पृष्ठ 314
6. परसाई रचनावली भाग – 1 पृष्ठ 249
7. परसाई रचनावली भाग – 5 पृष्ठ 38
8. परसाई रचनावली भाग – 3 पृष्ठ 72
9. परसाई रचनावली भाग – 3 पृष्ठ 204
10. परसाई रचनावली भाग – 3 पृष्ठ 286
11. परसाई रचनावली भाग – 4 पृष्ठ 359
12. हरिशंकर परसाई :– बेईमानी की परत – पृष्ठ 51
13. परसाई रचनावली भाग–1 पृष्ठ–279